❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को
नव वर्ष विक्रमी 2074 एवं
आर्यसमाज स्थापना दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 40, अंक 21 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 मार्च, 2017 से रविवार 26 मार्च, 2017
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

म.प्र. के आदिवासी क्षेत्र में वैदिक जनजातीय महासम्मेलन सम्पन्न

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन का हुआ भव्य उदघाटन

विद्यालय देगा आदिवासी बच्चों को 'हौंसला एक उड़ान का' – सुरेशचन्द्र आर्य

आदिवासी क्षेत्रों में सेवा कार्यों मे और अधिक गति देनी होगी – प्रकाश आर्य

शिक्षा प्रसार के लिए छोटे आर्य विद्यालयों के निर्माण में सहयोग करेंगी दिल्ली की आर्य संस्थाएं – धर्मपाल आर्य

जिले के सर्वश्रेष्ठ विद्यालयों में गिना जाएगा यह विद्यालय – कान्तिलाल भूरिया, सांसद, झाबुआ

सेवाश्रम संघ की संस्थानों के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को मिलेगा उन्नति का नया मंच – जोगेन्द्र खट्टर

महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन एम.डी.एच.) के सहयोग से बामनिया झाबुआ (म. प्र.) में 11 फरवरी 2017 को लगभग 7 करोड़ की राशि से नवनिर्मित महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन बामनियां के भव्य विद्यालय भवन का उद्घाटन महाशय धर्म पाल जी ने अपने कर कमलों से किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, मंत्री श्री प्रकाश आर्य, आर्यश्रेष्ठी श्री शिव कुमार चौधरी इन्दौर, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य, उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्ढा, उप प्रधाना श्रीमती उषा किरण आर्या, अ. भा. द. सेवा संघ के महामंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर, सहित दिल्ली से आर्य समाज के अनेक वरिष्ठ पदाधिकारी, कार्यकर्त्ता समाज सेवी व उदारमना दानी महानुभावों का शुभागमन आयोजन को गौरवान्वित कर गया।

उद्घाटन व महासम्मेलन में झाबुआ रतलाम लोक सभा के सांसद व पूर्व जनजातीय केन्द्रीय मंत्री श्री कान्तिलाल जी भूरिया, खादी ग्रामोद्योग म. प्र. के अध्यक्ष श्री सुरेश आर्य, क्षेत्रीय विधायक सुश्री निर्मला भूरिया सहित अनेक जनप्रतिनिधियों ने पधारकर महाशय जी द्वारा आदिवासी अंचल में चलाए जा रहे शिक्षा, सेवा, संस्कार की क्रान्ति की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

जनजातीय सम्मेलन में 7 हजार से अधिक ग्रामीण नागरिक व जनजातीय बन्धु परिवार सहित सम्मेलन में शिरकत की। एम.डी.एच. विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की

उद्घाटन एवं जनजातीय वैदिक आर्य महासम्मेलन के अवसर पर मंचस्थ (बाएं से दाएं) श्री सत्यानन्द आर्य, श्री शिव कुमार चौधरी, श्री प्रकाश आर्य, क्षेत्रीय विधायक श्रीमती निर्मला भूरिया, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, महाशय धर्मपाल जी, क्षेत्रीय सांसद श्री कान्तिलाल भूरिया, राज्यमन्त्री श्री सुरेश आर्य एवं अन्य अतिथिगण।

महासम्मेलन का विहंगम दृश्य : सात हजार से अधिक महानुभावों ने बनाया सम्मेलन एतिहासिक

शेष समाचार एवं समारोह की चित्रमय झांकी पृष्ठ 4-5-8 पर

वेद-स्वाध्याय

द्वेष त्याग

इदमुच्छ्रेयो अवसानमागां शिवे मे द्यावापृथिवी अभूताम्।
असपत्नः प्रदिशो मे भवन्तु न वै त्वा द्विष्मो अभयं नो अस्तु।।–अथर्व. 19/14/1
ऋषिः **अथर्वा।।** देवता – **द्यावापृथिवी।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ – **इदं उत् श्रेयः**=अब यही कल्याणकर है कि **अवसानं आ अगाम्**=मैं अब समाप्ति पर आ जाऊँ, द्वेष-परम्परा का विराम कर दूँ, अतः हे शत्रो! **त्वाम्**=तेरे साथ न **वै द्विष्मः**= तो द्वेष करना छोड़ ही देता हूँ। **द्यावा-पृथिवी**= द्यौ और पथिवी भी **मे**= मेरे लिए शिवे **अभूताम्**=अब कल्याणकारी हो जाएँ, **प्रदिशः मे असपत्नाः भवन्तु**=सभी दिशाएँ मेरे लिए शत्रुरहित हो जाएँ **नः अभयं अस्तु**=मेरे लिए अब अभय-ही-अभय हो जाए।

विनय – हे मेरे भाई! मैंने अब तक तुमसे बहुत द्वेष किया, खूब शत्रुता की। तुमने मुझे हानि पहुँचायी तो बदले में मैंने तुम्हें पहुँचायी। तुमने फिर उसका बदला लिया तो मैंने उसक प्रत्युत्तर दिया। इस प्रकार हमारी द्वेषाग्नि दिनोंदिन बढ़ती ही गई है, भयंकर रूप धारण करती गई है। इस द्वेष से हम दोनों ही की बहुत हानि हो चुकी है, हम शीर्ण हो चुके हैं। मैं देखता हूँ कि क्रोध में आकर दाँत पीसते हुए प्रत्युत्तर देते जाने का, ईट का जवाब पत्थर से देते जाने का, कहीं अन्त नहीं है सिवा इसके कि हम दोनों का शीघ्र ही पूरा विनाश हो जाए। कल्याण इसी में है कि अब हम इसे समाप्त करें। हममें से कोई एक अब उत्तर का प्रत्युत्तर न देकर, क्रोध का जवाब क्रोध में न देते हुए शान्ति में देकर, इसमें विराम लगा दे, इसी में कल्याण है, निश्चय से इसी में कल्याण है। इसी प्रकार यह बढ़ती हुई, हमारा नाश करने वाली क्रोधाग्नि शान्त होगी। द्वेष कभी प्रतिद्वेष से शान्त नहीं होता, अतः तुम चाहो तो अब भी मुझसे द्वेष करो, मुझे चाहे कितनी हानि पहुँचाओ, परन्तु मैं अब उसका उत्तर नहीं दूँगा। मैं आज इस द्वेष-परम्परा का अवसान करता हूँ। आज से तुम मेरे शत्रु नहीं हो, तुम तो मेरे भाई हो। मेरे हृदय के किसी कोने में भी अब तुम्हारे प्रति द्वेष का लेश नहीं है। देखें, अब तुम मुझसे कब तक द्वेष करते रहोगे, कर सकोगे। मैं तो अब तुम्हारे क्रोध को, तुम्हारे क्रोध-प्रेरित सब हानि को प्रेमपूर्वक सहता ही जाऊँगा; प्रेम ही करता जाऊँगा; प्रेम ही करता जाऊँगा। मैं आज अपने द्वेष के सब अस्त्र फेंककर, इस दिशा में पूरी हार मानकर निश्चिंत हो गया हूँ। द्वेष समाप्त करते ही मैं तो आज बड़ा विश्राम अनुभव कर रहा हूँ। अब जबकि मैंने इस कल्याण-मार्ग का अवलम्बन किया है तो, हे द्यौ और पृथिवि! अब तुम भी मेरे लिए कल्याणकारी हो जाओ। मेरे अन्तःद्वेष के कारण अबतक यह संसार भी मुझे तपता अनुभव हुआ करता था, पर अब तो यह सब आकाश और भूमि, आसमान और भूमि, यह सब संसार मेरे लिए कल्याणमय हो जाए। हे भाई! केवल तुम्हारे प्रति ही नहीं किन्तु किसी भी व्यक्ति के प्रति आज से मेरा द्वेष नहीं रहा है, अतः ये सब विस्तृत दिशाएँ मेरे लिए आज से बिल्कुल असपत्न हो गई हैं, शान्त और सुखदायिनी हो गई हैं। **साभार : वैदिक विनय**

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

जाति तन्त्र पर भारी लोकतन्त्र

जिस तरह पांच राज्यों में जातिवाद को लेकर राजनीतिक समीकरण बन रहे थे। चुनाव में कथित जातिवादी नेता अपनी जाति को लेकर जीत के प्रति आश्वस्त थे। राजनीति के नाम पर समाज में जातिवाद का जहर घोला जा रहा था। चुनाव परिणाम के बाद वह कहीं न कहीं बिखरता नजर आया। क्या अब इन परिणामों के बाद कहा जा सकता है कि देश अपने वास्तविक लोकतंत्र की ओर जा रहा है? पांच राज्यों में यदि उत्तर प्रदेश जैसे जनसंख्या बाहुल्य राज्य को ही देखें तो उत्तर प्रदेश की जनता ने जातिवाद की राजनीति करने वालों को नकार दिया है। जीत किसकी हुई तथा कौन सरकार बनाएगा यह विषय आर्य समाज के लिए इतने मायने नहीं रखता। आर्य समाज के लिए मायने रखता है सामाजिक समरसता, सामाजिक सद्भाव और राजनैतिक स्तर से ऊपर उठकर जातिगत और राष्ट्रीय एकता बनी रहे। जिसके लिए आर्य समाज अपने प्रारम्भ के दिनों से ही बलिदान देता आया है।

पिछले कुछ साल के राजनीतिक इतिहास पर यदि गौर करें तो विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं के पास जहाँ सर्वसमावेशी विकास, अस्पताल, रोजगार, जनता की मूलभूत सुविधाओं की अपेक्षा सिर्फ एक मुद्दा जातिवाद की खाई खोदने का कार्य चुनाव के दौरान देखने को मिलता है। इन ताजा हुए चुनावों में ही देखें तो किस प्रकार दलित-मुस्लिम, यादव-मुस्लिम, जाट आदि मुस्लिम समीकरण बनाये जा रहे थे। जातिगत और सामाजिक भय पैदा कर वोट बटोरने का कार्य होता दिख रहा था। शायद राजनेता अब भी 1990 के दशक की सोच और मानसिकता लेकर चल रहे हैं। उन्हें समय की दीवार पर लिखी इबारत को साफ-साफ समझना होगा और जाति को लेकर अपनी समझ बदलनी होगी या फिर वक्त की बदलती हुई धारा उन्हें एक किनारे कर अपने रास्ते चल देगी।

आज राजनीति के अतीत के ग्रन्थ बदल रहे हैं। आज मतदाता बदल गया। उसकी राजनैतिक सोच बदली या कहो उसकी समझ बढ़ रही है। आज वह तमाम संचार के साधनों, मीडिया माध्यमों के द्वारा एक मतदाता ही नहीं अपितु राजनीति का एक हिस्सा भी बन गया है। आज उसके अन्दर अपने आर्थिक हित, राष्ट्र की सुरक्षा नीति और विकास को लेकर जागरूकता बढ़ी है। शायद इससे भी तथाकथित जातिवादी नेताओं के घेरे टूट रहे हैं। अब सच्चाई हमारी आंखों के आगे है बशर्ते हममें उस सच्चाई की आंखों में झांकने का साहस हो। सच्चाई यह है कि देश का मतदाता जाति और समुदाय की घेरेबंदी से तेजी से बाहर निकल रहा है। बरसों पुरानी इस फांस को वह तोड़ रहा है।

लगभग बीते पौने तीन दशक से अपने को सेक्युलर बताने वाली पार्टियों ने मुस्लिमों को अपने सोच के फंदे में जकड़ रखा है। ये पार्टियां चाहती हैं मुसलमान अपनी पहचान के घेरे में कैद रहें जबकि मुसलमानों में बहुत से लोग, खासकर नौजवान चाहते हैं कि अच्छी नौकरी मिले, तरक्की हो, जीवन-स्तर सुधरे। किन्तु मदरसों और मस्जिदों से संचालित होने इस मजहब के ढेरों नेता, इमाम, उलेमा और मौलवी नहीं चाहते कि मुस्लिम समुदाय उनके इस धार्मिक मकडजाल से बाहर आये। इसलिए वो सिविल कोड या तीन तलाक जैसे मुद्दे को धार्मिक अस्मिता का प्रश्न बनाकर वोट स्वरूप लेने का कार्य करते नजर आते हैं।

हालाँकि मीडिया का एक बड़ा धड़ा राजनीति में मुसलमानों की कम होती नुमाइंदगी को लेकर भी सवाल खड़े कर रहा हैं। जबकि पढ़े लिखे मुस्लिम तबके से जवाब आ रहा है कि विधायक हिन्दू हो या मुसलमान, इससे क्या फर्क पड़ता है। विकास तो सबको चाहिए और यह कोई भी कर सकता है। बहरहाल जीत अपने साथ जिम्मेदारी लेकर आती है, घमंड नहीं! यह वास्तविक लोकतंत्र की जीत है, किसी धर्म-जाति की नहीं और जब-जब समाज को कोई ऐसा नेता मिला है जो सबके दुःख दर्द को अपना दुःख दर्द समझे, तब-तब समाज ने उस नेता को अपने सर-आँखों पर बिठाया है। राष्ट्रपति रहे डॉ. अब्दुल कलाम और सरदार पटेल ऐसे ही व्यक्तित्व थे। देश का हर नागरिक उन्हें अपना प्रतिनिधि मानता था, चाहे वह किसी जाति, क्षेत्र, सम्प्रदाय एवं भाषा का हो। सच्चा नेता वही है जो निःस्वार्थ भाव से जनता की सेवा करे। अपने लिए कुछ न चाहे। वह समाज के प्रत्येक व्यक्ति का प्रतिनिधि हो। वह हर जाति का हो और हर जाति उसकी। मुझे तो आजतक यह समझ नहीं आया कि एक जाति का प्रतिनिधित्व उसी जाति का व्यक्ति क्यों करे? सही नेता तो सबका प्रतिनिधि है।

भारतीय प्रजातंत्र दुनिया के बेमिसाल उदाहरणों में से एक है। लेकिन राजनीति से जुड़े लोगों ने प्रजातंत्र को अपनी दुकान बना डाला। जिस कारण प्रजा के मुद्दे हाशिये पर चले गये। उत्तरप्रदेश चुनाव परिणाम के बाद जिस तरह एक दलितवादी नेता का ईवीम मशीन में गड़बड़ का आरोप आया। यह भी एक किस्म से जनादेश का अपमान है। हो सकता है यह उनकी हार पर हताशा हो लेकिन इस बदलती परिस्थिति में आज इन नेताओं को समझना होगा कि अब उनका पुराना माल नहीं बिकेगा!! हालाँकि कहा जाता है कि जब राजा ही लुटेरा हो तो प्रजा अपनी सुरक्षा कहाँ ढूँढेगी ! विवश समाज तब अपनी सुरक्षा अपने कबीलों में, जातियों में, सम्प्रदाय में अथवा अपने किसी भी समुदाय में खोजने को मजबूर हो जाता है। यह अलग बात है कि पूरी सुरक्षा वहाँ भी नहीं मिलती। शोषण तो हर जगह है। एक जाति के अन्दर ही क्यों, एक परिवार के अन्दर भी शोषण देखा जा सकता है। जाति तो कई बहानों में से एक बहाना है, कारण नहीं तो फिर बेहतर यही है कि नेता अपनी धारणा बदलें। नए सिरे से सोचें कि आधुनिक भारत में वोटर किन बातों को पसंद बनाकर अपने वोट डाल रहा है। आज वह अपनी जरूरतों का ध्यान रख रहा है या नेताओं की?

– ***सम्पादक***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

केरल में क्यों जरुरी है वैदिक शंखनाद?

....केरल में इस वेद रिसर्च संस्थान में वेदों को उनकी यथार्थता एवं पवित्रता के अनुरूप बिना किसी 'शब्द' व 'स्वर' की त्रुटि के पारम्परिक रूप से पढ़ाने एवं संरक्षित करने के उद्देश्य से पूरी पवित्रता के साथ वेदों के संरक्षण की इस सनातन व अनूठी प्राचीन परम्परा से संस्कृत, मलयालम अंग्रेजी आदि भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है। वैदिक शिक्षा, वैदिक तकनीक, वैदिक विज्ञान, वैदिक समाज, योग, ध्यान आदि विषयों पर शोधपूर्ण कार्य के लिए इस संस्थान का निर्माण किया जा रहा है।....

दक्षिण भारत का एक प्रदेश केरल जो प्राकृतिक सुषमा के साथ देवताओं की भूमि के रूप में जाना जाता है आज वह केरल धर्मांतरण की भूमि बन चुका है। सम्पूर्ण भारत के किसी भी कोने में जाकर देख लीजिए। केरल से निकली ईसाई नन आपको ईसाई धर्मान्तरण करती दिख जाएगी। पिछले वर्ष सोशल मीडिया पर एक खबर चली थी कि केरल के स्कूलों में नर्सरी क्लास में पढ़ाया जाता है 'एक हिन्दू था जो बेहद गरीब था। वह कई मन्दिरों में गया लेकिन हिन्दू भगवान ने उसकी फरियाद नहीं सुनी। फिर वह चर्च गया तो ईसा मसीह ने उसे तुरन्त अमीर बना दिया और फिर वह ईसाई बन गया!' खबर में यदि जरा भी सत्यता है तो सोचिये! ईसाई मिशनरीज इन छोटे छोटे बच्चों के मन मस्तिष्क में कितना जहर भर रहे हैं? हालाँकि केरल के अन्दर बच्चों के कोमल-निश्च्छल मन में अपने धर्म के प्रति दुर्भावना भरने का यह खेल नया नहीं है।

फिलहाल केरल में जनसंख्या सन्तुलन की नजर से देखें तो लगभग 30 फीसदी ईसाई, लगभग 30 फीसदी मुस्लिम और 10 फीसदी हिन्दू हैं, बाकी के 30 फीसदी किसी धर्म के नहीं है यानी वामपंथी हैं जिन्हें धार्मिक आंकड़ों में हिन्दुओं में जोड़ा जाता है लेकिन उन्हें जब मौका मिलता है, जिधर फायदा होता उधर खिसक जाते हैं चाहे चुनावों में मदनी जैसों का साथ देना हो अथवा चर्च से चन्दा ग्रहण करना हो। वह कोई मौका हाथ से नहीं जाने देते। समूचे भारत की तरह ही समूचे केरल में भी हिन्दू बिखरे हुए और असंगठित हैं, उनके पास चुनाव में वोट देने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है, न ही नीति-निर्माण में उनकी कोई बात सुनी जाती है, न ही उनकी समस्याओं के निराकरण में! केरल में हिन्दुओं की कोई ''राजनैतिक और धार्मिक ताकत'' नहीं है, एक तरफ इस्लामियत तो दूसरी तरफ ईसाईयत बीच में हिन्दू समुदाय इसके बाद अगर कुछ बचता है तो 'मार्क्सवादी सेकुलर' हिन्दुओं के हितों और धार्मिक अनुष्ठानों पर तंज कसते दिखाई देते हैं। हो सकता है जल्दी ही कश्मीर की तरह केरल भी उसी रास्ते पर चला जाये जहाँ हिन्दुओं की कोई सुनवाई नहीं होगी तो यहाँ इस्लाम से जुड़ी बातों पर प्रवचन देनेवाले लोगों की बहुत पूछ है। उनके बड़े-बड़े पोस्टर और कटआउट सड़कों और चौराहों पर उसी तरह से लगे हुए होते हैं जैसे फिल्मी सितारों के लगे होते हैं। कुछ-कुछ दिनों में धार्मिक सम्मेलन आयोजित कराए जाते हैं जिनमें अरब देशों से लौटे लोग भाषण देते हैं। मस्जिद के ऊंची मीनार हो या दुकानों के अरबी शैली में लिखे नाम या फिर सड़क पर चलती बुर्कानर्शी औरतें, माहौल किसी अरब देश जैसा लगता है।

दिल्ली एन.सी.आर. तक सिमटी मीडिया यहाँ बैठकर गधे और पिल्लों पर बहस करा देती है लेकिन केरल आदि प्रदेशों में हिन्दू आदिवासियों को ईसाई बनाने के लिए निवेशित धन राशि और खुलेआम होते धर्मांतरण पर मौन है। हरिद्वार से लेकर काशी तक बड़े-बड़े आश्रमों में बैठे मठाधीश अपनी ऐशोआराम की जिन्दगी में लीन है। इन सब की विवशता हो सकती है लेकिन राष्ट्र और धर्म की रक्षा के लिए आर्य समाज न विवश था और न ही विवश है और न ही विवश रहेगा। यूँ तो आर्य समाज के 140 साल के इतिहास में एक से एक बड़े आयोजन कार्यक्रम हुए लेकिन **दक्षिण भारत में होने वाले इस दक्षिण भारतीय वैदिक महासम्मेलन से आर्य समाज एक अनूठी गौरवगाथा लिखने जा रहा है।** सर्वविदित है कि आर्य समाज अपने जन्म से ही वैदिक धर्म रूपी वृक्ष की जड़ें सींचता आया है। इसलिए अब जनजातीय समुदाय में शिक्षा का प्रचार-प्रसार कर रहा है। उस समुदाय में जहाँ से अन्य समुदाय की मिशनरीज को धर्मांतरण के सबसे अधिक मौके मिलते हैं। मध्यप्रदेश, असम, नागालैंड समेत कई राज्यों के बाद आर्य समाज के परम अनुगामी महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त, दानवीर महाशय धर्मपाल जी सहायता से ''महाशय धर्मपाल MDH वेद रिसर्च फाउन्डेशन खोला जा रहा है ताकि धार्मिक असंतुलन से झूझते केरल जैसे प्रान्त से ईसाइयत और दारुल हरम बनाने की साजिश को नाकाम कर वैदिक सन्देश देने के लिए विश्व भर के लिए सत्य सनातन वैदिक धर्म की रक्षा के लिए आचार्य विद्वान पैदा किये जा सके।

उल्लेखनीय है कि केरल में इस वेद रिसर्च संस्थान में वेदों को उनकी यथार्थता एवं पवित्रता के अनुरूप बिना किसी 'शब्द' व 'स्वर' की त्रुटि के पारम्परिक रूप से पढ़ाने एवं संरक्षित करने के उद्देश्य से पूरी पवित्रता के साथ वेदों के संरक्षण की इस सनातन व अनूठी प्राचीन परम्परा से संस्कृत, मलयालम अंग्रेजी आदि भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है। वैदिक शिक्षा, वैदिक तकनीक, वैदिक विज्ञान, वैदिक समाज, योग, ध्यान आदि विषयों पर शोधपूर्ण कार्य के लिए इस संस्थान का निर्माण किया जा रहा है। वेद भारत की धरोहर है, दुर्भाग्यवश आज वैदिक ज्ञान, वैदिक शिक्षा, वैदिक तकनीक आदि की उपेक्षा भारत में ही हो रही है, जबकि विदेशों में वेद पर शोध हो रहे हैं आर्य समाज के इस प्रयोग से जो संस्कृति और विचार लेकर युवा बाहर निकलेंगे निश्चित रूप से वही इस विश्व को शासित करेंगे, यह हमारा विश्वास है।

-राजीव चौधरी

बोध कथा

ईश्वर सर्व-व्यापक है

बादशाह अकबर की बात सुनाता हूँ। बीरबल का नाम तो आप जानते हैं, बहुत विद्वान् थे वह। अकबर के साथ रहते थे। स्वयं तो ईश्वर को याद करते ही थे, कई बार बादशाह को भी कहते थे- ''ईश्वर को याद करो!''

एक दिन बादशाह ने कहा-''अच्छा बीरबल! तुम तो कहते हो ईश्वर को याद करूँ तो बताओ कि ईश्वर कहाँ रहता है? कैसे दर्शन हो सकते हैं और वह क्या करता है?''

एक-साथ तीन प्रश्न पूछ लिये उसने। तीनों बहुत कठिन। बीरबल चिन्ता में डूब गया; बोला-''सात दिनों का अवकाश दो। आपके सवालों का उत्तर सातवें दिन दूँगा।''

परन्तु उत्तर देना कहाँ सरल है! छः दिन बीत गए। बीरबल को उत्तर नहीं सूझा। सातवें दिन चिन्ता में डूबा बैठा था वह। तभी उसके नन्हे बेटे ने आकर कहा-''पिताजी! आप चिन्ता में क्यों हैं?''

बीरबल ने कहा-''बादशाह ने तीन प्रश्न पूछे हैं। उनका उत्तर नहीं मिलता।'' प्रश्न भी बता दिये उसको।

नन्हा-सा बालक बोला-''वाह! इतनी-सी बात की चिन्ता है आपको? इनके उत्तर तो मैं बता सकता हूँ।''

बीरबल ने कहा-''बताओ!''

बेटे ने कहा-''आपको नहीं, बादशाह को बताऊँगा। मुझे उनके पास ले चलो।''

बीरबल अपने बेटे को लेकर बादशाह के पास पहुँच गया; बोला-''श्रीमन्! आपके सवालों का उत्तर यह नन्हा बालक देगा।''

बादशाह ने आश्चर्य से बालक की ओर देखा; बोले-''इतने कठिन प्रश्न और उत्तर देगा यह बालक?'' फिर बोले-''अच्छा बच्चे, बताओ, हमारे प्रश्नों का उत्तर क्या है?''

बालक ने कहा-''बादशाह! तुम भारत में नये आये हो, भारत की संस्कृति को जानते नहीं। भारत की संस्कृति यह है कि जब कोई आदमी मिलने के लिए आये तो पहले उसे खिला-पिलाकर उसका सत्कार करो, बाद में उससे बात करो। एकदम से उत्तर पूछने का रिवाज भारत का नहीं है।''

बादशाह ने झेंपकर कहा-''अच्छा बोलो, तुम क्या खाओगे?''

बच्चे ने कहा-''मैं तो छोटा-सा बालक हूँ। मुझे दूध ही अच्छा लगता है।''

बादशाह ने कटोरे में दूध मँगवाया। दूध आ गया। बच्चे को देकर कहा-''पियो बच्चे!''

बालक ने कटोरे को लेकर उसके अन्दर झाँका, इधर-उधर से उसको देखा, फिर अँगुली डालकर उसमें कोई वस्तु ढूँढने लगा।

बादशाह ने कहा-''यह क्या करते हो बालक? दूध को पीते क्यों नहीं?''

बच्चे ने कहा-''बादशाह, मैंने सुना है कि दूध में मक्खन होता है, परन्तु इस दूध में तो मक्खन दिखाई नहीं देता?''

बादशाह ने हँसकर कहा-''तुम अभी बच्चे हो! अरे, मक्खन इसके अन्दर अवश्य है। उसे देखना है तो दूध को दही में डालकर जमाना पड़ता है। दही बन जाय, तो इसमें मथनी डालकर मथना पड़ता है; बिलोना पड़ता है। जब बहुत ज़ोर से बिलोया जाता है, तब मक्खन ऊपर आता है।''

बच्चे ने कहा-'' तो सुनो बादशाह! तुम्हारे पहले दो सवालों का जवाब यही है। ईश्वर है सब जगह। इस संसार के कण-कण में रहता है वह, परन्तु उसके दर्शन तब होते हैं, जब मन को ओ३म् के जाप का दही डालकर जमाया जाता है। फिर धारणा, ध्यान और समाधि की मथनी से बिलोया जाता है। तब भक्त अपने हृदय में भगवान् को अपने समक्ष देखता है, स्पष्ट रूप से देखता है। तब भगवान् के दर्शन होते हैं, निश्चित रूप से होते हैं।''

बादशाह ने कहा-''वाह रे बालक! मेरे दो प्रश्नों का उत्तर दे दिया तुमने। मेरा सन्देह दूर हो गया। अब बताओ, यह ईश्वर क्या करता है?''

बच्चे ने कहा-''यह बात गुरु बनकर पूछते हो या शिष्य बनकर?''

बादशाह ने कहा-''गुरु बनकर कोई नहीं पूछता, मैं शिष्य बनकर पूछता हूँ।''

बच्चे ने कहा-''अद्भुत शिष्य हो तुम! गुरु तो नीचे पृथिवी पर खड़ा है और तुम ऊपर तख्त पर विराजमान हो?''

बादशाह लज्जित होकर जल्दी से नीचे उतर आया। बच्चे को तख्त पर बैठा दिया। हाथ जोड़कर बोला-''अब बताओ, ईश्वर क्या करता है?''

बच्चे ने हँसकर कहा-''यही करता है, ऊपरवाले को नीचे और नीचे वाले को ऊपर।''

और यह खेल क्या हमने अपनी आँखों से नहीं देखा? मैंने बड़े-बड़े राजा और महाराजाओं को बम्बई की गलियों में खाक छानते हुए देखा है। उन लोगों को, जो कुछ वर्ष पूर्व जेलों में बन्दी थे, ताज और तख्त सँभालते, शासन करते देखा है। उस भगवान् की महिमा महान् है। कौन उसका वर्णन कर सकता है! जब सब लोग छोड़ जाते हैं, जब सभी आशाएँ समाप्त हो जाती हैं, तब भी वह मनुष्य के साथ रहता है, तब भी उसकी रक्षा करता है।

- साभार : बोधकथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन बामनिया का भव्य विद्यालय भवन

प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया और महाशय जी स्वयं को नहीं रोक पाए और स्वयं बच्चों, नागरिकों के साथ नृत्य किया। सम्पूर्ण वातावरण महाशय धर्मपाल एम. डी.एच. मय हो गया। इतना बड़ा कार्य सेवाश्रम द्वारा पिछले 50 वर्ष से चलाए जा रहे सेवाकार्य का परिणाम है कि आज सेवाश्रम झाबुआ जिले में अपनी पहचान बना चुका है। प्रारम्भ में लाला राम गोपाल शालवाले, पृथ्वीराज शास्त्री, वेदव्रत मेहता, माता प्रेमलता शास्त्री, माता ईश्वर रानी आदि का पुरुषार्थ आजकल देखने की स्थिति में आ गया है। महासम्मेलन को

विद्यालय का लोकार्पण करते महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, मन्त्री प्रकाश आर्य, उपमन्त्री विनय आर्य जी, समाजसेवी श्री शिव कुमार चौधरी जी, जोगेन्द्र खट्टर जी एवं सांसद श्री कान्ति लाल भूरिया जी

तत्पश्चात् नगर व आस-पास के सभी जातीय, धार्मिक सामाजिक राजनैतिक लोगों ने महाशय जी का स्वागत कर आशीर्वाद पाया। आश्रम के बच्चों ने सांस्कृतिक लोकनृत्य व कविता पाठ तथा आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी से सबका मन मोह लिया।

मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में सभी को ईमानदारी से पुरुषार्थ करने का उपदेश दिया तथा उपस्थित जनता से अनुरोध किया कि आप सब मुझे इतना आशीर्वाद दें कि मैं और अधिक उत्साह के साथ समाज की सेवा कर सकूं। आयोजन में क्षेत्र के विधायक व राजस्थान

झाबुआ क्षेत्र के सभी छोटे-बड़े छात्रावासों एवं विद्यालयों का किया गया दौरा

महर्षि दयानन्द आर्य माध्यमिक विद्यालय काकनवानी, महर्षि दयानन्द आर्य प्राथमिक विद्यालय, बालवासा में स्वागत एवं क्षेत्रीय जनता से संवाद

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थांदला, जिला झाबुआ (म.प्र.) में अतिथियों के आगमन पर स्वागत समारोह में उपस्थित आर्यजन एवं आश्रम के बच्चों की प्रस्तुति

सफल बनाने में आयोजन समिति के अध्यक्ष श्रीमती संगीता, श्री विश्वास सोनी, संयोजक आचार्य दया सागर, राजस्थान संयोजक जीववर्धन शास्त्री, व्यवस्था प्रमुख प्राचार्य प्रवीण अत्रे, धर्मवीर शास्त्री, पवन आर्य, दिलीप आर्य संजय मखेड तथा इनके साथी संजय आर्य क्षेत्रीय सेवाश्रम के कार्यकर्त्ताओं की महती भूमिका रही। महाशय जी के पारिवारिक जन बेटियां, दामाद और दोहित्र भी समारोह में पधारे। आगन्तुक विशिष्ट अतिथियों को झाबुआ का पारम्परिक स्मृति चिह्न शस्त्र देकर सम्मानित किया गया कार्यकर्त्ताओं का आभार श्री जोगेन्द्र खट्टर ने किया।

महाशय जी ने मांगा आशीर्वाद

16 फरवरी 17 को महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थान्दला जिला झाबुआ (म.प्र.) की रात्रि सेवाश्रम संकल्प समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। महाशय जी के सम्मान में पहली बार पूरा थान्दला नगर व आस-पास का ग्रामीण अंचल-सेवाश्रम की ओर झुक गया। तीन घण्टे प्रतीक्षा करने के बाद महाशय जी का काफिला थान्दला नगर पहुंचा तो नगर प्रवेश द्वार पर शताधिक नौजवानों ने बाईक रैली निकालकर महाशय जी को बाजे-गाजे और गगनभेदी नारों के साथ आश्रम में प्रवेश कराया, आश्रम प्रवेश द्वार पर पारम्परिक आदिवासी वाद्यन्त्र और लोकनृत्य के साथ सम्मान किया। के संसदीय सचिव भीमाभाई डामोर जी भी उपस्थित रहे। दिल्ली संस्था के वरिष्ठ पदाधिकारियों सहित बड़ी संख्या में गणमान्य महानुभावों ने संकल्प समारोह में पधारकर आयोजन को सफल बनाया।

- शेष पृष्ठ 5 एवं 8 पर

झाबुआ जिले में स्थान -स्थान पर पर काफीले को रोक-रोककर हुआ भव्य स्वागत

पत्रकार संघ द्वारा स्वागत - जैन समाज द्वारा स्वागत - ग्राम पंचायत द्वारा स्वागत - राष्ट्रीय राजपूत करनी सेना द्वारा हुआ भव्य स्वागत

जनजातीय सम्मेलन को सम्बोधित करते महाशय धर्मपाल जी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी, विधायक श्रीमती निर्मला भूरिया, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एवं सांसद श्री कान्तीलाल भूरिया जी, समाजसेवी श्री सत्यानन्द आर्य जी, राज्यमन्त्री श्री सुरेश आर्य जी एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी।

सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों एवं अतिथियों का स्वागत करते श्री विश्वास सोनी जी। दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ एवं फीता काटकर विद्यालय का उद्घाटन तथा सम्मेलन के अवसर पर विद्यालय के बच्चों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न प्रस्तुतियों के मनभावन दृश्य

समारोह के अवसर पर आयोजन समिति के कार्यकर्त्ताओं एवं अन्य सदस्यों का स्वागत एवं सम्मान

महाशय जी के सानिध्य में विद्यालय का स्टाफ

Glimpses of the Yajur Veda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Tributes to the Sacrificer and His Wife

"May both of you be of one mind towards us, may both be of one thought, free from sins and be propitious for us. May none violate the sacrifice, nor injure the sacrificer".

"May both of you unite with the spirit of sacrifice, be of the single object of offering yourself for the welfare of others or be pleasing to each other and residing together with abundance of food and vigour".

Reverence to the offerers of oblation and performers of sacrifice is the instruction of Yajurveda. A student, a hermit or a saint has no scope for charity and material help. Their sustenance is looked after by the lpouse-holder and his wife. The wedded couple carry in their heart the fire of sacrifice from the sacred altar of marriage. Their new home becomes the centre of all benevolent activities of which the two are the selfless performers.

भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञँ हिँसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसो शिवौ भवतमद्य नः।। (Yv.xii.60)

समितँ सं कल्पेथांसंप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ। इषमूर्जमभि संवसानौ।। (Yv.xii.57)

Bhavatam, nah samanasau sacetasavarepasau.
ma yajnam himsistam ma yajnapatim jatavedasau sivau bhavata madya nah..
Samitam sam kalpetham sampriyau rocisnu sumanasyamanau.
isamurjamabhi samvasanau..

The Mystery of 'Deva'

There are wrong notions regarding the term 'Deva', often mentioned in the Vedic Texts. 'Devas' are often described as special creatures of mysterious shape, colour and form moving about in the sky. Man performs rituals and offers prayers to propitiate them. It is believed that the Vedic hymns provide rules for their worship. It is also said there is competition and rivalry among the Devas to attain superiority. This is because many people do not actually understand the true meaning of the Vedic terms and quite often give indistinct, incoherent and poor interpretations. 'Deva'. indeed, is purely a qualitative word.

Deva implies one who gives and never expects to take anything in exchange. He is all splendour and imparts splendour to others. The sun, the moon, the wind, the water, the earth all come in the category of Deva as they provide freely precious life-force to the living creatures. Likewise father, mother, teachers, and similarly others who serve us by way of rearing, protecting, teaching, ruling and guiding belong to the category.

It should be borne in mind that the aforesaid Devas derive power from the Creator God who alone is to be worshipped. Deva and God are not synonymous. Infact, the Supreme God is the designer and sustainer of the Devas who possess virtuous qualities. And so, in all fairness, their virtues are to be praised and followed in right spirit.

अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।।(Yv.xiv.20)

Agnirdevata vato devata suryo devata candrama devata vasavo devata rudra devata-ditya devata marutod evata visve deva devata brhaspatirdevatendro devata varuno devata..

The Priest

"Well defined is my divine knowledge, sharpened is my valour. Distinct is the force of my triumphant sacrificers whose priest I am"- announces the virtuous priest. The priest or Purohita is he who is ever ready to guide the sacrificer. He is in forefront to manage well all the functions of the institution. He shows the way of life. The ruler rules as per the wise counsel of Purohita who possesses self-control and has no greed or vanity. He is the well-wisher of all. The Vedic priestd eclares with self-confidence : "I remain away from all fear and enjoyment. Morality is my valour. Character is my strength. Spiritual wealth is my weapon. To awaken the common people is my sole desire. My sense organs are sharp and sound. I can hear the hidden voice of the people and can perceive their future."

The sacrificer is inspired by the unblemished character and ideal manners of the priest. His life style gets transformed by the priest's illustrious character, devout voice, auspicious chanting, and magnanimity of nature. As the head of a man directs his arms, likewise the priest prepares and moulds the benign manners of the sacrificer and guides him in his actions.

सँशितं मे ब्रह्म सँशितं वीर्यं बलम्। सँशितं क्षत्रं जिष्णु यस्याहमस्मि पुरोहितः।। (Yv.xi.81)

Samsitam me berahma samsitam viryam balam. samsitam ksatram jisnu yasyahamasmi purohitah..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 22

गतांक से आगे....

1. गाता है /गाती है
सः गायति = वह गाता है।
सा गायति = वह गाती है।
एषः गायति = यह गाता है।।
एषा गायति = यह गाता है।
कः गायति ? = कौन गाता है ?
जिज्ञेशः गायति = जिज्ञेश गाता है।
जिज्ञेशः किं गायति ?
= जिज्ञेश क्या गाता है ?
जिज्ञेशः संगठन-सूक्तं गायति।
= जिज्ञेश संगठन सूक्त गाता है।
का गायति ? = कौन गाती है ?
प्रतिभा गायति = प्रतिभा गाती है।
प्रतिभा किं गायति ?= प्रतिभा क्या गाती है ?
प्रतिभा प्रभातगीतं गायति।
= प्रतिभा प्रभात गीत गाती है।
अहम् अहं गायामि =मैं गाता हूँ /गाती हूँ।
2. होता है /होती है
सः शान्तः भवति = वह शान्त होता है।
सा शान्ता भवति = वह शान्त होती है।
एषः प्रसन्नः भवति =यह प्रसन्न होता है।
एषा प्रसन्ना भवति = यह प्रसन्न होती है।
कः ज्ञानवान् भवति ?=कौन ज्ञानवान् होता है ?
गौरांगः ज्ञानवान् भवति = गौरांग ज्ञानवान् होता है।
गौरांगः कथं ज्ञानवान् भवति ?
= गौरांग कैसे ज्ञानवान् होता है ?
संस्कृत-पुस्तकानि पठित्वा सः ज्ञानवान् भवति।
= संस्कृत पुस्तकें पढ़ कर वह ज्ञानवान् बनता है।
का पारंगता भवति ?=कौन पारंगत बनती है ?
विदुला पारंगता भवति = विदुला पारंगत बनती है।
कस्मिन् विषये सा पारंगता भवति ?
= किस विषय में वह पारंगत बनती है ?
शास्त्रीय-संगीत विषये सा पारंगता भवति। = शास्त्रीय संगीत विषय में वह पारंगत बनती है।
विद्यालये कार्यक्रमः भवति।
विद्यालय में कार्यक्रम होता है।
अहम् उत्तीर्णः भवामि = मैं उत्तीर्ण होता हूँ/होती हूँ।
3. ले जाता है/ले जाती है।
सः नयति = वह ले जाता है।
सा नयति = वह ले जाती है।
एषः नयति = यह ले जाता है।
एषा नयति = यह ले जाता है।
कः नयति ? = कौन ले जाता है ?
पार्थः नयति = पार्थ ले जाता है।
पार्थः किं नयति ?
= पार्थ क्या ले जाता है ?
पार्थः मातुः ते भोजनं नयति ।
= पार्थ माँ के लिये भोजन ले जाता है।
का नयति ? = कौन ले जाती है ?
सत्या नयति = सत्या ले जाती है
सत्या किं नयति ?
= सत्या क्या ले जाती है ?
सत्या धेनोः ते आहारं नयति।
= सत्या गाय के लिये आहार ले जाती है।
अहम् नयामि = मैं ले जाता हूँ /ले जाती हूँ ।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग जिसने महर्षिकृत ग्रन्थ कई बार फाड़ डाले

आर्यसमाज के आरम्भिक काल के निष्काम सेवकों में श्री सरदार गुरबख्श सिंह जी का नाम उल्लेखनीय है। आप मुलतान, लाहौर तथा अमृतसर में बहुत समय तक रहे। आप नहर विभाग में कार्य करते थे। बड़े सिद्धान्तनिष्ठ, परम स्वाध्यायशील थे। वेद, शास्त्र और व्याकरण के स्वाध्याय की विशेष रुचि के कारण उनके प्रेमी उन्हें ''पण्डित गुरुदत्त द्वितीय'' कहा करते थे।

आपने जब आर्यसमाज में प्रवेश किया तो आपकी धर्मपत्नी श्रीमती ठाकुर देवीजी ने आपका कड़ा विरोध किया। जब कभी ठाकुर देवीजी घर पर सत्यार्थ प्रकाश वा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका को देख लेतीं तो अत्यन्त क्रुद्ध होतीं। आपने कई बार इन ग्रन्थों को फाड़ा, परन्तु सरदार गुरबख्शसिंह भी अपने पथ से पीछे न हटे। पति के धैर्य तथा नम्रता का देवी पर प्रभाव पड़े बिना न रहा। आप भी आर्यसमाज के सत्संगों में पति के संग जाने लगीं।

पति ने पत्नी को आर्यभाषा का ज्ञान करवाया। ठाकुर देवी ने सत्यार्थप्रकाश आदि का अध्ययन किया। अब तो उन्हें वेद-प्रचार की ऐसी धुन लग गई कि सब देखकर दंग रह जाते। पहले भजनों के द्वारा प्रचार किया करती थीं, फिर व्याख्यान देने लगीं। व्याख्याता के रूप में ऐसी प्रसिद्धि पाई कि बड़े-बड़े नगरों के उत्सवों में उनके ओजस्वी व्याख्यानों को बड़ी श्रद्धा तथा आदर से सुना जाता था। गुरुकुल कांगड़ी का उत्सव तब आर्यसमाज का सबसे बड़ा महोत्सव माना जाता था। उस महोत्सव पर भी आपके व्याख्यान हुआ करते थे। पति के निधन के पश्चात् आपने धर्मप्रचार में और अधिक उत्साह दिखाया। फिर विरक्त होकर देहरादून के समीप आश्रम बनाकर एक कुटिया में रहने लगीं। वह एक अथक आर्यमिशनरी थीं।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्य समाज, सुन्दर विहार, दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, सुन्दर विहार, दिल्ली 14 से 16 अप्रैल 2017 के मध्य अपना वार्षिकोत्सव आयोजित कर रहा है। जिसके अन्तर्गत डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री जी व आचार्य श्री अंकित उपाध्याय जी भजन व प्रवचन प्रस्तुत करेंगे।

-अमर नाथ बत्रा, मंत्री

कृपया ध्यान दें : आर्य अनाथालय में

प्रवेश सूचना

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित व आर्य समाज के सिद्धान्तों पर आधारित आर्य अनाथालय के वीरेश प्रताप परिसर,1488, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली -02 में कार्यरत रानी दत्ता आर्य में निम्न आय वर्ग के अनाथ व निराश्रित बालक- बालिकाओं का प्रवेश नर्सरी (4½ साल) से कक्षा तीसरी (07 साल) तक प्रारम्भ हो गया है। कार्यालय में आकर मूल दस्तावेज दिखाकर प्रवेश फार्म लें। निवास, भोजन, शिक्षा आदि की नि:शुल्क उत्तम व्यवस्था है।

सम्पर्क सूत्र- **श्री गौरव पुरी**
011-23260428, 23272084

आर्य समाज के आदर्शों पर संचालित छात्रावास चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, देसराज परिसर, सी ब्लॉक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-65 में निम्न आय वर्ग की अनाथ व निराश्रित बालिकाओं का प्रवेश छठी से नवमीं कक्षा तक प्रारम्भ हो गया है। कार्यालय में आकर मूल दस्तावेज दिखाकर प्रवेश फार्म लें। निवास, भोजन, शिक्षा आदि की नि:शुल्क उत्तम व्यवस्था है।

संपर्क सूत्र - **श्रीमती विद्या,**
011-26316604, 26840229
-नीतिन्जय चौधरी, सचिव

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में 28 मई से 4 जून के मध्य राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर का आयोजन भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, गांव-जसात, तहसील पटौदी, गुरुग्राम में आयोजित किया जाएगा। शिविर का उद्घाटन रविवार 28 मई सायं 5 बजे होगा। सभी प्रान्तीय सभाओं, जिला समाजों व गुरुकुलों में जहां वीरांगना दल की शाखाएं लगती हैं से प्रार्थना है कि वे अपनी चुनी हुई वीरांगनाओं को इस शिविर में भेजें।

-साध्वी डॉ. उत्तमायति, संयोजिका

ध्यान योग, आसन, प्राणायाम प्रशिक्षण शिविर एवं वृहद् यज्ञ

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, झज्जर के तत्त्वावधान में 27 मार्च से 2 अप्रैल 2017 के मध्य नि:शुल्क ध्यान, योग, आसन, प्राणायाम प्रशिक्षण शिविर एवं अथर्ववेद 19-20 काण्ड बृहद् यज्ञ आचार्य सत्यवीर जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न होगा। मुख्य वक्ता स्वामी रामानन्द सरस्वती, आचार्य खुशीराम, आर्य तपस्वी, आचार्य चांद सिंह आर्य व आचार्य रवि शास्त्री होंगे। *- स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी*

91वां ध्यान योग शिविर

पातञ्जल योगधाम, आर्य नगर ज्वालापुर हरिद्वार में 6 से 12 अप्रैल 2017 के मध्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में 91वां ध्यान योग शिविर एवं सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। 8 अप्रैल को ''योगाभ्यास में व्रतोपवास का महत्त्व'' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा।

-दिव्यानन्द सरस्वती, प्रधान

भव्य भजन संध्या

आर्य समाज मन्दिर राजौरी गार्डन, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में देश धर्म पर बलिदान होने वाले वीरों की स्मृति में भव्य भजन संध्या का आयोजन 23 मार्च 2017 सायंकाल 6 से 8 बजे के मध्य श्री नवीन अग्रवाल जी की अध्यक्षता में आयोजन किया जाएगा। मुख्य अतिथि श्री सुभाष आर्य नेता सदन, दिल्ली नगर निगम, विशिष्ट अतिथि श्री विनय आर्य महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं श्री सतीश चड्डा महामन्त्री केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य होंगे। *- श्री जगदीश आर्य, प्रधान*

होलीकोत्सव पर्व सम्पन्न

आर्य समाज खलासी लाइन, सहारनपुर के तत्त्वावधान में नवशेष्टि एवं होलीकोत्सव पर्व के अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ ब्रह्मा श्री सुरेन्द्र चौहान जी थे। मुख्य यजमान मा. सोमदत्त आर्य सपत्नी सविता आर्य रहे। यज्ञोपरान्त श्री आजाद सिंह लहरी ने कर्णप्रिय भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री मनीराम सैनी ने की व मंच संचालन श्री रविकांत राणा ने किया। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- रविकान्त राणा, मंत्री

बोधोत्सव पर आर्य महासम्मेलन

केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर द्वारा ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में आर्य महासम्मेलन 26 फरवरी को प्रधान श्री दर्शन कुमार जी की अध्यक्षता में आर्य समाज शक्ति नगर के प्रांगण में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दयानन्द मठ दीनानगर से पधारे ब्रह्मचारियों द्वारा यज्ञ से हुआ। श्री इन्द्रपाल आर्य, गौरव तलवाड़ तथा सीनी कुमार ने प्रभु भक्ति तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती की महिमा के भजनों का गुणगान किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता महात्मा चैतन्य मुनि जी और स्वामी सूर्यदेव जी विशेष रूप से पधारे। कार्यक्रम में अमृतसर की समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों तथा गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। *-राकेश मेहरा, महामन्त्री*

खेद व्यक्त : खेद है कि साप्ताहिक आर्य सन्देश का गत अंक 13 से 19 मार्च, 2017 तकनीकी खराबी के कारण प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। - *सम्पादक*

अजमेर में बनेगा महर्षि दयानन्द सरस्वती का भव्य स्मारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण स्थली अजमेर में शहर के लोगों एवं पर्यटकों को उनके कृतित्व भारतीय समाज की बेहतरी के लिए किये गये कार्यों एवं व्यक्तित्व से अवगत कराने के लिए एक राष्ट्रीय स्तर का स्मारक अशोक उद्यान के पास बनवाया जाएगा। जिसकी तैयारी अजमेर विकास प्राधिकरण की ओर से की जा रही है। इस पर करीब 50 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। महर्षि दयानन्द स्मारक निर्माण के लिए यह प्रस्ताव अजमेर विकास प्राधिकरण ने केंद्र सरकार को भी भेजा है। जयपुर रोड पर अजमेर में प्रवेश के लिए भव्य द्वार बनवाया जायेगा इसके अलावा महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्मारक तथा मूर्ति स्थापित की जाएगी तथा ओपन थिएटर और पार्क का भी निर्माण होगा। अजमेर विकास प्राधिकरण अनुसार स्मारक के निर्माण से पूर्व इसकी विस्तृत कार्ययोजना रिपोर्ट तैयार करने में (एडीए) जुटा है। स्मारक पर खर्च होने वाली राशि तथा स्मारक का डिजाइन व अन्य मामले तय किये जा रहे है। जिन्हें जल्द पूरा कर स्मारक को अंतिम रूप दे दिया जायेगा।

बेटियां नहीं बच पायीं तो जग छार-छार हो जायेगा

वेद ने महिलाओं को ब्रह्मा पद से सुशोभित किया है। महिलाएं ही राष्ट्र व गृहस्थ जीवन का आधार है। जब हम अपना इतिहास उठाकर देखते हैं तो महिलाओं ने कभी पत्नी, कभी पुत्री, कभी बहिन तो कभी मां के रूप में अपना सर्वस्व समर्पित करके राष्ट्र की रक्षा की है और अपनी संस्कृति को बचाया है। उक्त विचार आर्योपदेशिका बहिन डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने आर्य समाज हकीमपुर में आयोजित महिला सम्मेलन में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हमें विचार करना होगा यदि मां कौशल्या व मां देवकी को इस धरा पर आने नहीं देंगे तो श्रीराम व श्रीकृष्ण कहां से आयेंगे। उनके द्वारा सुनाई 'बेटियां नहीं बच पायीं तो जग छार-छार हो जायेगा'' पक्तियों को श्रोताओं ने खूब सराहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता देवेन्द्र आर्य ने की।

- ब्रजकिशोर, मन्त्री

शोक समाचार

श्रीमती चन्द्रकांता जी का निधन

स्त्री आर्य समाज महावीर नगर नई दिल्ली की प्रधाना, संगीताचार्या श्रीमती चन्द्रकांता जी का लगभग 80 वर्ष की अवस्था में 14 मार्च 2017 को निधन हो गया। वे अपने पीछे पति श्री सुदर्शन नान्द्रा सहित बेटे अनिल, अतुल व बेटी का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 17 मार्च को सम्पन्न हुई जिसमें दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी सहित अन्य अनेक आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।-सम्पादक

आर्य सन्देश पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म 4 नियम 8
(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)

प्रकाशक का नाम	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
प्रकाशक की अवधि	:	साप्ताहिक
प्रकाशक का समय	:	प्रति बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार
प्रकाशक का नाम	:	धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
मुद्रक का पता	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड,नई दिल्ली- 110001
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
प्रकाशक का पता	:	पूर्ववत्
सम्पादक का नाम	:	धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
सम्पादक का पता	:	पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1% से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001

मैं धर्मपाल आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है।

- धर्मपाल आर्य, प्रकाशक एवं मुद्रक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 20 मार्च, 2017 से रविवार 26 मार्च, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 23/24 मार्च, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 मार्च, 2017

'आर्य रत्न' श्री भुवनदत्त जी को फिजी का सर्वोच्च सम्मान

आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी के ट्रस्टी श्री भुवन दत्त 'आर्य रत्न' जेपी जी को 24 फरवरी 2017 को 'ऑफीसर ऑफ द ऑर्डर ऑफ फिजी' अथवा 'ऑफ' अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान फिजी सरकार की ओर से मानवता की उच्चस्तरीय सेवाओं के लिए राष्ट्रपति जार्ज कॉनरोटे द्वारा प्रदान किया गया। यह 'भारत रत्न' की तरह फिजी का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

पृष्ठ 4 का शेष

महाशय जी पधारे भामल : 17 फरवरी 17 को महाशय धर्मपाल जी भामल पधारे। ज्ञात हो कि यहां पर ग्रामीण क्षेत्र में पांचवीं कक्षा तक का विद्यालय सेवाश्रम के सहयोग से संचालित हो रहा है। साथ में सभी परिजन व आर्यजनों ने भी सेवाक्षेत्र में आकर विगत 20–22 वर्षों से उड़ीसा से आकर संजय आर्य जी यहां पर जी–तोड़ मेहनत कर रहे हैं। महाशय जी के सहयोग से विद्यालय में 5 कमरे व शौचालय, बाथरूम बनाए गए हैं। यहां अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में महाशय जी ने सबको आशीर्वाद दिया और विद्यालय के लिए और 10 कमरे बनवाने का आश्वासन दिया। दिल्ली से पधारे अतिथिजनों ने सेवाश्रम के द्वारा चलाए जा रहे अन्य सेवा केन्द्र कामनवानी, बालवासा का भी निरीक्षण किया।

ज्ञात हो कि यह क्षेत्र आदिवासियों का है। यहां ईसाई मिशनरियों ने अपने कार्य को विस्तार से फैलाकर जगह–जगह विद्यालय चर्च अस्पताल खोलकर धर्मान्तरण का कार्य अधिकता से किया है। नजर उठाने पर चारों तरफ चर्च का बोलबाला दिखाई देता है। अत: क्षेत्र को, देश को बचाना है तो आर्यों को आगे आना ही होगा।

– *जोगेन्द्र खट्टर*

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड का चुनाव सम्पन्न

सर्वसम्मति डॉ. विनय विद्यालंकार जी प्रधान एवं श्री नरेन्द्र लाल आर्य महामन्त्री निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के वैधानिक चुनाव आर्यसमाज ज्वालापुर के तत्वावधान में हरिद्वार में पूज्यपाद स्वामी गुरुकुलानंद जी (कच्चाहारी) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। निर्वाचन में राज्य की 81 आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें सर्वसम्मति **प्रधान– डॉ. विनय विद्यालंकार** (हल्द्वानी), व.उपप्रधान– श्री गिरीश मल्होत्रा (अल्मोड़ा), उप प्रधान – श्री ज्ञानचन्द आर्य (देहरादून) **महामन्त्री– श्री नरेन्द्र लाल आर्य** (मालधन–नैनीताल), वरिष्ठ उपमन्त्री– श्री मोखी सिंह आर्य (गढ़ीनेगी), उपमंत्री – डॉ. प्रमोद गोयल आर्य (ज्वालापुर), **कोषाध्यक्ष– श्री बसन्त कंसल आर्य** (हल्द्वानी) सह कोषाध्यक्ष– श्री प्राणनाथ खुल्लर (धामावाला देहरादून), लेखा निरीक्षक– श्री पृथ्वीराज आर्य (रुद्रपुर) अधिष्ठाता आर्य वीरदल– श्री देवदत्त आर्य (सुलतानपुर पट्टी) सर्वसम्मति से निर्वाचित घोषित किये गए। इसी के साथ आगामी सत्र के लिए छाया अधिकारी भी चुने गए। **नव निर्वाचित अधिकारियों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।**

प्रधान
डॉ. विनय विद्यालंकार

महामन्त्री
श्री नरेन्द्र लाल आर्य

कोषाध्यक्ष
श्री बसन्त कंसल आर्य

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह